जैविक एवं रासायनिक युद्ध के खतरे

डॉ.एन.के. बोहरा

सम्पूर्ण विश्व में संक्रामक रोगों से मानव सभ्यता को बचाने हेतु सतत प्रयास आज भी जारी हैं, वहीं दूसरी ओर घातक रोगों के विषाणुओं को हथियार का इस्तेमाल दुश्मन की सेना, आबादी, खाद्यान्नों एवं पशुधन को नष्ट करने अथवा हानि पहुंचाने में किया जा रहा है। हाल ही में अमेरिका एवं तालिबान के बीच अफगानिस्तान में हुए युद्ध में जैविक एवं रासायनिक हथियारों का उपयोग किया गया था। युद्ध के नियमों में जैविक एवं रासायनिक हथियारो को मानवता के विरुद्ध माना गया है।

इतिहास

ऐसा माना जाता है कि प्रथम जैव हथियार रोमवासियों द्वारा प्रयुक्त किया गया था। इसके अन्तर्गत शत्रु की जलापूर्ति में मरे हुए पशुओं को डालकर जल को दूषित किया गया था। 1918 में जापान की सेना की एक टुकड़ी ने मंचूरिया को जीतकर वहां के कांगशान गांव में युद्धबंदियों पर जैव हथियारों का प्रयोग किया था। वहां प्लेग विषाणुओं का प्रयोग किया गया था। इसी प्रयास के पश्चात् 1941 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपना जैव युद्ध कार्यक्रम शुरू किया। जैविक युद्ध कार्यक्रम के इस प्रयास में अमेरिका ने कुछ क्षेत्रों में खतरनाक रसायनों का छिड़काव कर इन क्षेत्रों में प्रवेश वर्जित कर दिया था।

प्रथम विश्व युद्ध में पारम्परिक हथियारों के साथ-साथ रासायनिक आयुधों का इस्तेमाल पहली बार किया गया था। जर्मन फौजों ने क्लोरीन एवं मस्टर्ड गैस (डाई क्लोरो डाइएथिल सल्फाइड) का प्रयोग कर दुश्मनों के करीब एक लाख लोगों को मौत के मुंह में डाल दिया। यद्यपि प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भविष्य में इन खतरनाक हथियारों से बचाव हेतु 1925 में जेनेवा संधि हुई परन्तु फिर भी द्वितीय विश्व युद्ध में लुक-छिपकर पेट्रोलियम जेली बम एवं अन्य जैव हथियारों का प्रयोग किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों ने और वियतनाम युद्ध में स्थानीय साम्यवादियों ने अमरिकियों के खिलाफ मधुमक्खियों का इस्तेमाल दुश्मनों के छक्के छुड़ाने के लिए किया था। वियतनामियों ने मधुमक्खियों को अमेरिकन वर्दी की पहचान हेतु प्रशिक्षित किया जिससे वे अमेरिकन सैनिकों पर टूट पड़ती थी। अमेरिका-वियतनाम युद्ध को अब तक का सबसे लम्बी अवधि का रासायनिक युद्ध कहा जाता है। इसमें अमरीका द्वारा 1961-1971 के बीच वियतनामी क्षेत्र के जंगलों और फसलों को नष्ट करने के लिए 94 हजार टन से अधिक शाकनाशियों एवं 8000 टन ज़हरीले रसायनों का प्रयोग किया गया था। इससे वियतनाम का 25000 वर्ग कि.मी. का जंगल और 13 हजार वर्ग कि.मी. का कृषि क्षेत्र तबाह हो गया था। इसके परिणाम आज भी देखे जा सकते हैं।

ईराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन के पास जैविक आयुध भंडार थे जिसमें पच्चीस मिसाइलों के शीर्ष में ग्यारह हज़ार पौंड सूक्ष्मजीवी संग्रहित थे। इसे वे ग्रेट इक्वेलाइज़र कहते थे। अमेरिका एवं तालिबान युद्ध में आतंकवादियों ने जैविक हथियारों का इस्तेमाल किया तथा अमेरिका सहित कई देशों में एन्थ्रेक्स के विषाणु फैलाकर भय पैदा किया। अफगानिस्तान में अमेरिका-तालिबान युद्ध में बिन लादेन ने जैविक आयुधों के प्रयोग का आव्हान करके सम्पूर्ण मानव सभ्यता के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

जैव हथियार क्या हैं?

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जैविक युद्ध से तात्पर्य रोग फैलाने वाले बैक्टीरिया, वायरस आदि सूक्ष्मजीवों, कुछ विषैली फफूंदों या इनसे स्रावित होने वाले विष का बड़े पैमाने पर प्रयोग कर दुश्मनों की सेना एवं नागरिकों का मनोबल गिराने से है। वर्तमान में जीन इंजीनियरिंग का उपयोग कर इन विषाणुओं को विकसित किया जा सकता है तथा इन्हें गरीब देशों के परमाणु अस्त्र के रूप में इस्तेमाल किया जा